PEOPLE'S UNIVERSITY

भारतीय ज्ञान परंपरा

(संक्षिप्त परिचय)

(राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में)

"भारतीय ज्ञान परंपरा-संक्षिप्त परिचय "

(राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में)

भारतीय ज्ञान प्रणाली:-

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस), या भारतीय ज्ञान परम्परा विभाग **भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय का एक प्रभाग है जिसका उद्देश्य ज्ञान की स्वदेशी भारतीय प्रणालियों को बढ़ावा देना है**। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, भारत की तीसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति है. यह 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है. यह नीति 30 जुलाई, 2020 को जारी की गई थी. यह नीति 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति की जगह लेती है अक्टूबर 2020 में स्थापित, यह नई दिल्ली में एआईसीटीई मुख्यालय में स्थित है।

भारत अनेक परंपराओं व संस्कृतियों का देश

अगर भारत की पहचान ***अनेकता में एकता वाले बहु-सांस्कृतिक*** समुदाय की बन पाई है तो इसका पूरा श्रेय देश की ***उद्भात व सहिष्णु परंपरा*** को जाता है। भारत अनेक परंपराओं और संस्कृतियों का देश है। यहां हर धर्म और संप्रदाय सैकड़ों वर्षो से अपने ढंग से पल्लवित और पुष्पित होते आए हैं। यह ऐसा देश है, जहां धार्मिक विविधता व सहिष्णुता को समाज व कानून दोनों से मान्यता प्राप्त है। धार्मिक सहिष्णुता का अर्थ सहनशीलता अथवा सहिष्णु होने की अवस्था, गुण या भाव होता है। भारत के इतिहास में प्राचीन काल से ही धर्म का यहां की संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। कई शताब्दियों तक द्रविड़ परंपरा से आर्य परंपरा का सुंदर संयोग हुआ है। इसके बाद भी अनेक जातियों से सांस्कृतिक सम्मेलन की प्रक्रिया जारी रही। इसकी सुंदर अभिव्यक्ति वैदिक रचनाओं में मिलती है। वसुधैव कुटुम्बकम इसका प्रमुख लक्ष्य है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का अर्थ :-

भारत हमेशा से **ज्ञान परंपरा** और **ज्ञान** संस्कृति के लिए जाना जाता है। प्राचीन सभ्यताएं **ज्ञान** के क्षेत्र में भारत का ऋण स्वीकार करती आ रही हैं। यदि हम **ज्ञान** की बात करें तो यह भाषा, दर्शन, **ज्ञान** की व्यावहारिकता, लोक, मूर्तिकला पर आधारित है।

भारत में ज्ञान की परंपरा बहुत ही प्राचीन है और इसका आरंभ **वेदों** से माना जाता है। भारतीय ज्ञान परंपरा एक समृद्ध और विविधतापूर्ण इतिहास रखती है, क्योंकि यह परंपरा हजारों सालों से चली आ रही है। जो सदियों से मानव सभ्यता को आकार देती रही है। यह परंपरा सिर्फ भारत की सीमाओं तक ही सीमित नहीं रही है, बल्कि विश्व के विभिन्न हिस्सों में इसका गहरा प्रभाव पड़ा है।

हमारी भारतीय संस्कृति और सभ्यता ने सदियों से विज्ञान, गणित, खगोल, चिकित्सा, आयुर्वेद और दर्शन जैसे अनेक क्षेत्रों में अद्वितीय योगदान दिया है। भारतीय मनीषियों ने अपने गहन चिंतन और अनुसंधान से न केवल अपने देश में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी विज्ञान और ज्ञान के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान हासिल किया।

ज्ञान की परिभाषा:-

कहा जाए तो ज्ञान की परिभाषा देना भी **"ज्ञान"** ही है, ***"ज्ञान वह सूचना, तथ्य, समझ और अनुभव है जिसे व्यक्ति द्वारा सीखा, अर्जित या समझा जाता है"*** यह किसी विशेष विषय या वस्तु के बारे में गहन जानकारी और समझ का परिणाम होता है। ज्ञान केवल जानकारी तक सीमित नहीं होता, बल्कि व्यक्ति की अनुभवजनित समझ, तर्क और विश्लेषणात्मक क्षमता को भी शामिल करता है।

भारतीय पारंपरिक ज्ञान:-

पारंपरिक ज्ञान (टीके), स्वदेशी ज्ञान (आईके), लोक ज्ञान और स्थानीय ज्ञान आम तौर पर **क्षेत्रीय , स्वदेशी या स्थानीय समुदायों की सांस्कृतिक परंपराओं में अंतर्निहित ज्ञान प्रणालियों को संदर्भित करता है**।

भारतीय ज्ञान परंपरा का कालक्रमिक चक्र

1. **वैदिक काल**
   - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद
   - वेदांग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष)
   - यज्ञ, मंत्र, ब्रह्मविद्या की शुरुआत
   - धर्म और कर्तव्य की अवधारणा

2. **उत्तरवैदिक काल / उपनिषद काल**
   - उपनिषदों की रचना (आत्मा, ब्रह्म, मोक्ष का विचार)
   - दर्शन शास्त्र की नींव – सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदांत
   - धार्मिक ग्रंथ – महाभारत, रामायण
   - धर्मसूत्र व स्मृतियाँ – मनुस्मृति आदि

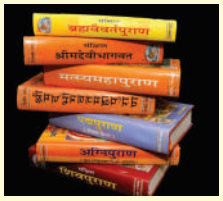

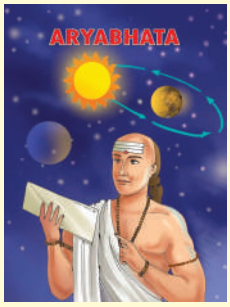

3. **गुप्त काल – "भारतीय ज्ञान का स्वर्णयुग"**
   - आर्यभट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य (गणित, खगोल, ज्योतिष)
   - चरक, सुश्रुत (आयुर्वेद)
   - कालिदास, भास, दंडी (काव्य, साहित्य)
   - दर्शन, शास्त्र और विज्ञान में उत्कर्ष

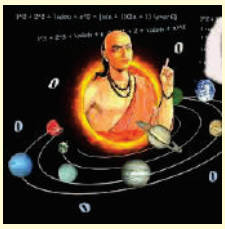

4. **बौद्ध और जैन दर्शन का काल**
   - गौतम बुद्ध और महावीर का ज्ञान दर्शन
   - त्रिपिटक, आगम साहित्य
   - तर्क, शील, समाधि, ज्ञान की अवधारणाएँ
   - नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों की स्थापना

5. **मध्यकाल**
   - शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य (भक्ति और वेदांत दर्शन)
   - भारतीय संगीत, कला, और स्थापत्य में विकास
   - भक्ति आंदोलन की शुरुआत
   - व्याकरण, न्यायशास्त्र, कामशास्त्र आदि का विकास

6. **मुस्लिम काल**
   - ज्ञान का संरक्षण गुरुकुलों, मठों और मंदिरों में, मंदिरों में मुसलमानों द्वारा मुस्लिम साहित्य संस्कृत का भारतीय संदर्भ में समन्वय मदरसे और मस्जिदों में
   - भक्ति और सूफी आंदोलन के माध्यम से शास्त्रीय ज्ञान, धार्मिक साहित्य, संस्कृत का प्रचार अरबी फारसी साहित्य के माध्यम से शास्त्रीय ज्ञान का प्रसार
   - कुछ हद द्वारा तक मुस्लिम शासकों संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद

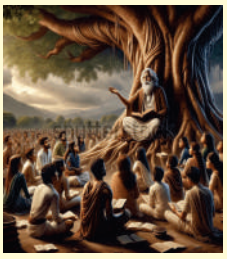

7. **औपनिवेशिक काल**
   - अंग्रेजों द्वारा पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था का विघटन
   - भारतीय नवजागरण – राजा राममोहन राय, विवेकानंद, दयानंद सरस्वती
   - आधुनिक विज्ञान और भारतीय परंपरा का प्रचार व आलोचना संस्कृत संपर्क
   - वेद, उपनिषद, गीता आदि पर पुनरवलोकन
   - ईसाई मिशनरियों द्वारा भारतीय परंपरा पर आलोचना व सांस्कृतिक संपर्क

8. **स्वतंत्रता पश्चात काल**
   - भारतीय ज्ञान परंपरा पर अकादमिक शोध
   - आईआईटी, संस्कृत विश्वविद्यालय, आयुर्वेद और योग का पुनरुत्थान
   - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा को मुख्यधारा में लाने का प्रयास

भारतीय ज्ञान परंपरा का इतिहास:-

भारत में ज्ञान की परंपरा बहुत ही प्राचीन है और इसका आरम्भ वेदों से माना जाता है। उल्लेखनीय है कि **'वेद'** शब्द **'विद्'** धातु से बना है जिसका अर्थ 'जानना' होता है। भारतीय ज्ञान परम्परा केवल भारत की सीमाओं तक ही सीमित नहीं रही है, बल्कि विश्व के विभिन्न हिस्सों में इसका गहरा प्रभाव पड़ा है।

भारतीय ज्ञान का इतिहास भी बेहद समृद्ध रहा है। इसमें खगोल, गणित, और चिकित्सा विज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिकाएं हैं। भारत की ज्ञान परंपरा का वैश्विक प्रभाव भी गहरा रहा है। कई प्राचीन भारतीय विचार और सिद्धांत पश्चिमी विज्ञान और दर्शन पर भी प्रभाव डाल चुके हैं। तो आइये जानते है कि किस तरह भारतीय ज्ञान परम्परा का हमारी ज़िन्दगी पर प्रभाव पड़ता है|

- प्राचीन भारत में शिक्षा का माध्यम गुरुकुल प्रणाली थी, जहां छात्र अपने गुरु के सानिध्य में ज्ञान प्राप्त करते थे। यह प्रणाली संपूर्ण और समग्र शिक्षा प्रदान करती थी।
- भारत में योग और आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति की परंपरा भी अत्यंत समृद्ध रही है, जो शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य का संतुलन स्थापित करती है।
- भारत में धर्म और दर्शन का विज्ञान से अद्भुत समन्वय रहा है। यहाँ के धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथों में विज्ञान के सिद्धांतों का गहन विवरण मिलता है, जो अद्वितीय हैं।
- आर्यभट्ट और वराहमिहिर ने गणित और खगोल विज्ञान में जो योगदान दिया है, वह आज भी वैज्ञानिक समाज द्वारा मान्यता प्राप्त है। आर्यभट्ट ने शून्य की खोज की और ग्रहों की गति का अध्ययन किया।
- रामानुजन ने गणित के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया। उनकी थ्योरियों ने आधुनिक गणित को नई दिशा दी।
- मध्यकालीन और आधुनिक भारत में विज्ञान के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण खोजें और विकास हुए। सी.वी. रमन, एपीजे अब्दुल कलाम और विक्रम साराभाई जैसे वैज्ञानिकों ने भारतीय विज्ञान को वैश्विक मंच पर पहुँचाया।
- भारत की ज्ञान और विज्ञान परंपरा का वैश्विक प्रभाव भी गहरा रहा है। कई प्राचीन भारतीय विचार और सिद्धांत पश्चिमी विज्ञान और दर्शन पर भी प्रभाव डाल चुके हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख आयाम :

- **वेद और उपनिषद:** भारतीय ज्ञान का आधार वेद और उपनिषद हैं। इन ग्रंथों में धर्म, दर्शन, विज्ञान, गणित, खगोल विज्ञान आदि विभिन्न विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई है।
- **आयुर्वेद:** आयुर्वेद एक प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति है जो रोगों के निदान और उपचार के लिए प्राकृतिक पदार्थों का उपयोग करती है।
- **योग:** योग एक प्राचीन भारतीय अभ्यास है जो शरीर, मन और आत्मा को एकीकृत करने में मदद करता है।
- **ज्योतिष:** भारतीय ज्योतिष ग्रहों, नक्षत्रों और कालचक्र की गति के आधार पर भविष्यवाणी करने की एक विद्या है।
- **गणित:** भारतीय गणितज्ञों ने शून्य, दशमलव प्रणाली, बीजगणित तथा अन्य महत्वपूर्ण गणितीय सिद्धांतों का विकास किया।
- **खगोल विज्ञान:** प्राचीन भारतीय खगोलविदों ने ग्रहों की गति, स्थित और ब्रह्मांड की संरचना के बारे में गहन अध्ययन किया।
- **धातुकर्म:** भारतीयों ने धातुओं को शुद्ध करने और उनसे विभिन्न उपकरण बनाने की कला में महारत हासिल की थी।

भारतीय ज्ञान परंपरा का विश्व पर प्रभाव :- भारतीय ज्ञान का विश्व के विभिन्न हिस्सों में व्यापक प्रभाव पड़ा है। उदाहरण के लिए:

- **योग:** आधुनिक युग में योग विश्वभर में एक लोकप्रिय व्यायाम और तनाव निवारण तकनीक के रूप में प्रचलित है।
- **आयुर्वेद:** आयुर्वेद के सिद्धांतों का उपयोग आधुनिक चिकित्सा में भी किया जाता है।
- **गणित:** भारतीय गणित के सिद्धांतों का उपयोग आधुनिक गणित में किया जाता है।
- **धर्म और दर्शन:** भारतीय दर्शन के सिद्धांतों ने आधुनिक वैश्विक दर्शन को भी प्रभावित किया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में आर्यभट्ट और वराहमिहिर का योगदान :-

आर्यभट्ट ने शून्य की खोज की और ग्रहों की गति पर काम किया, जबकि वराहमिहिर ने खगोल विज्ञान और ज्योतिष में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

भारतीय ज्ञान परंपरा के आधुनिक वैज्ञानिकों के नाम:-

सी.वी. रमन, एपीजे अब्दुल कलाम और विक्रम साराभाई जैसे वैज्ञानिक आधुनिक भारतीय विज्ञान के प्रमुख नाम हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रमुख विशेषता:- भारतीय ज्ञान, धार्मिक, दार्शनिकऔर वैज्ञानिक विचारों का अद्भुत समन्वय है, जो इसे अद्वितीय बनाता है।

भारतीय शिक्षा प्रणाली की विशेषताएं:-प्राचीन भारत में गुरुकुल प्रणाली प्रचलित थी, जहाँ छात्र गुरु के सानिध्य में ज्ञान प्राप्त करते थे।

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा के उद्देश्य:-

प्राचीन काल में शिक्षा का उद्देश्य **ज्ञान की प्राप्ति** था, न कि उपाधि पत्र की प्राप्ति इसलिए आज की भाँति शिक्षा पूर्ण होने के पश्चात् किसी प्रकार का उपाधि पत्र या प्रमाण पत्र प्राप्त करने की संस्कृति प्रचलन में नहीं थी । गुरू के नाम मात्र से ही शिष्य की प्रतिभा का आकलन कर लिया जाता था।

- **भारतीय ज्ञान परंपरा एवं साहित्य :-**

भारतीय ज्ञान परंपरा में साहित्य की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। **साहित्य ने भारतीय संस्कृति, इतिहास और दर्शन को संरक्षित और प्रचारित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है**। इसके माध्यम से हम अपने प्राचीन ज्ञान और संप्रदाय को समझ सकते हैं और उन तक पहुंच सकते हैं।

यह भारतीय ज्ञान परंपरा को एक **गत्यात्मक तथा व्यापक जीवन प्रणाली** के रूप में प्रस्तुत करते हुए भारत की गौरवशाली संस्कृति और परंपरा को स्थापित करेगा।

भारत में परंपराएं :-

भारत विश्व के **चार** प्रमुख धार्मिक परंपराओं का जन्मस्थान है। ये चार परंपराएं हैं। हिंदू, जैन, बौद्ध और सिख धर्म। इसके अलावा भारत में कई धर्म फले-फूले व पोषित हुए हैं।

भारत की सबसे पुरानी परंपरा :-

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ तक इतिहासकारों की यह मान्यता थी कि **वैदिक सभ्यता** भारत की सबसे प्राचीन सभ्यता है। परन्तु सर दयाराम साहनी के नेतृत्व में १९२१ में जब हड़प्पा (पंजाब के मॉन्टगोमरी जिले में स्थित) की खुदाई हुई तब इस बात का पता चला कि भारत की सबसे पुरानी सभ्यता वैदिक नहीं वरन सिन्धु घाटी की सभ्यता है।

- **भारतीय ज्ञान परंपरा एवं पर्यावरण** :-

भारतीय ज्ञान परंपरा में पर्यावरण को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, जहाँ प्रकृति को पूजनीय और संरक्षित करने की भावना प्राचीन काल से ही विद्यमान है, जो हमारे वेदों, पुराणों और लोक -साहित्य में भी दिखाई देती है.

भारतीय ज्ञान परंपरा की पर्यावरण के प्रति मान्यताएँ:

- **प्रकृति को पूजनीय मानना:** भारतीय संस्कृति में प्रकृति के विभिन्न रूपों जैसे पेड़, जल, अग्नि, वायु और पृथ्वी को देवता के रूप में पूजा जाता है.
- **पर्यावरण संरक्षण की भावना:** भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण की भावना प्राचीन काल से ही रही है, जो हमारे वेदों, पुराणों और लोक-साहित्य में भी दिखाई देती है.
- **पंच तत्वों का महत्व:** भारतीय दर्शन में प्रकृति को पाँच तत्वों (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश) से निर्मित माना गया है, जो मानव जीवन के लिए आवश्यक हैं.
- **जल का महत्व:** नदियों को पवित्र माना जाता है और जल संरक्षण के लिए तालाब, कुएं आदि बनाए जाते हैं.
- **वृक्षों का महत्व:** वृक्षों को पूजनीय माना जाता है और उनकी कटाई को बुरा माना जाता है.
- **प्राणियों के प्रति दया:** भारतीय संस्कृति में सभी प्राणियों के प्रति दया और प्रेम की भावना को महत्व दिया जाता है.
- **जीवनशैली:** भारतीय संस्कृति में प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण और स्थिर जीवनशैली पर जोर दिया जाता है.

उदाहरण:

- **नदी पूजा:** गंगा, यमुना, सरस्वती जैसी नदियों को पवित्र माना जाता है और उनकी पूजा की जाती है.
- **वृक्ष पूजा:** पीपल, बरगद जैसे वृक्षों को पूजनीय माना जाता है.
- **जल संरक्षण:** तालाब, कुएं आदि बनाए जाते हैं और जल को बर्बाद नहीं किया जाता.
- **प्राणियों के प्रति दया:** पशु-पक्षियों को नुकसान नहीं पहुंचाया जाता और उनकी रक्षा की जाती है.

- **भारतीय ज्ञान परंपरा कला एवं संस्कृति:-**

भारतीय ज्ञान परंपरा, में कला और संस्कृति, विज्ञान, साहित्य, और लोकपरंपराओं का समावेश होता है. यह परंपरा हज़ारों वर्षों से चली आ रही है और आज भी दुनिया भर में इसका प्रभाव रहा है.

- भारतीय ज्ञान परंपरा में वेदों का अत्यधिक योगदान है. वेद भारतीय सभ्यता के सबसे पुराने ग्रंथ हैं.
- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्ववेद में प्राकृतिक विज्ञान, चिकित्सा, और गणित के सिद्धांतों का वर्णन है.
- उपनिषद, जो वेदों के ही हिस्से हैं, और भारतीय दर्शन का केंद्रबिंदु माने जाते हैं.
- भारतीय ज्ञान परंपरा में कर्म और धर्म, भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय रहा है.

❖ **भारतीय ज्ञान परंपरा एवं ग्रह नक्षत्र :-**

भारतीय ज्ञान परंपरा में, ग्रह और नक्षत्रों को ब्रह्मांडीय घटनाओं और मानव जीवन पर प्रभावकारी तत्वों के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है, जिसका उपयोग ज्योतिष, पंचांग और धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाता है.

- **ग्रह:** भारतीय ज्योतिष में नौ ग्रह माने जाते हैं: सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु.
- **नक्षत्र:** भारतीय ज्योतिष में 27 नक्षत्रों की गणना की जाती है, जो चंद्रमा की गति के अनुसार आकाशीय तारों के समूहों को दर्शाते हैं.
- **वैदिक ज्योतिष:** वैदिक ज्योतिष, ग्रहों और नक्षत्रों की स्थिति और गति के आधार पर भविष्य की भविष्यवाणी और शुभ-अशुभ अवसरों का निर्धारण किया जाता है.
- **पंचांग:** पंचांग भारतीय ज्योतिष का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसमें तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण जैसे विवरण होते हैं, जो धार्मिक कार्यों और शुभ अवसरों के लिए महत्वपूर्ण होते हैं.
- **भारतीय ज्ञान परंपरा:** भारतीय ज्ञान परंपरा में, ज्योतिष को ब्रह्मांड के नियमों और मानव जीवन के बीच संबंध को समझने का एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है.

उदाहरण:

- जन्म कुंडली में ग्रहों और नक्षत्रों की स्थिति के आधार पर व्यक्ति के स्वभाव, भाग्य और भविष्य की भविष्यवाणी की जाती है.
- शुभ कार्यों के लिए पंचांग में बताए गए शुभ मुहूर्त और नक्षत्रों का उपयोग किया जाता है.
- कुछ लोग अपने नक्षत्र के अनुसार वृक्ष की पूजा करके अपने नक्षत्र को ठीक कर सकते हैं.

❖ **भारतीय ज्ञान परंपरा और अर्थशास्त्र:-**

भारतीय ज्ञान परंपरा में अर्थशास्त्र भी शामिल है. भारतीय ज्ञान परंपरा में विज्ञान, अध्यात्म, मनोविज्ञान, और प्रबंधन के क्षेत्र में ज्ञान का खज़ाना है. अर्थशास्त्र, भारत की बौद्धिक पूंजी का प्रमाण है.

- भारतीय ज्ञान परंपरा में अर्थशास्त्र के साथ- साथ वेद, उपनिषद, भगवदगीता, रामायण, और महाभारत जैसे ग्रंथ भी शामिल हैं.
- भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पर-लौकिक, कर्म और धर्म, और भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय रहा है.
- भारतीय ज्ञान परंपरा में शोध एक अनिवार्य तत्व है.
- भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान की समृद्ध और विविध परंपरा को संदर्भित किया जाता है जो हज़ारों वर्षों में भारतीय उपमहाद्वीप में विकसित हुई है.
- भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल स्रोत उपनिषद है.

❖ **भारतीय ज्ञान परंपरा और शोध:-**

भारतीय ज्ञान परंपरा और शोध, भारत की समृद्ध विरासत और ज्ञान-संस्कृति का अभिन्न अंग है. भारतीय ज्ञान परंपरा की समृद्ध विरासत में शोध एक अनिवार्य तत्व है भारतीय ज्ञान परंपरा और शोध के बारे में ज़्यादा जानकारीः

- भारतीय ज्ञान परंपरा की शुरुआत वेदों से मानी जाती है. वेद भारतीय सभ्यता के सबसे पुराने ग्रंथ हैं.
- भारतीय ज्ञान परंपरा में अनुसंधान सूक्ष्म और गहन है.
- भारतीय ज्ञान परंपरा में शोध और अन्वेषण वृत्ति का दिग्दर्शन किया जा सकता है.
- भारतीय ज्ञान परंपरा में शोध के ज़रिए ज्ञान सृजन, ज्ञान की परंपरा का विकास, और ज्ञान के उपयोग में सुधार किया जा सकता है.
- भारतीय ज्ञान परंपरा में शोध के ज़रिए भारतीय मानवसकता को उपनिवेशीकरण से मुक्त किया जा सकता है.
- भारतीय ज्ञान परंपरा में शोध के ज़रिए भारतीय ज्ञान परंपरा और शोध पर पुस्तकें लिखी जा सकती हैं.
- भारतीय ज्ञान परंपरा में शोध के ज़रिए प्राचीन ग्रंथों में छिपे ज्ञान के खजाने को खोजा जा सकता है.

- भारतीय ज्ञान परंपरा में शोध के ज़रिए प्राचीन ग्रंथों को संवारा जा सकता है.
- भारतीय ज्ञान परंपरा में शोध के ज़रिए मानव कल्याण के लिए उनका उपयोग किया जा सकता है

“भारतीय ज्ञान परंपरा संक्षिप्त परिचय" का सारांश एवं निष्कर्ष”

भारतीय ज्ञान परंपरा न केवल प्राचीन काल में बल्कि आज भी **विज्ञान, चिकित्सा, गणित** और अन्य क्षेत्रों में अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है। भारत के **मनीषियों और वैज्ञानिकों** का योगदान आने वाले समय में भी अमूल्य रहेगा। भारतीय ज्ञान की यह परंपरा **हर पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत** रहेगी ।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का आधुनिक शिक्षा में महत्व - निष्कर्ष रूप में, **आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा का एकीकरण सीखने के लिए अधिक संतुलित और समग्र दृष्टिकोण का वादा करता है**। यह न केवल बौद्धिक रूप से सक्षम व्यक्तियों को बल्कि भावनात्मक रूप से परिपक्व, नैतिक रूप से आधारित और आध्यात्मिक रूप से जागृत नागरिकों को भी पोषित करने का मार्ग प्रदान करता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का ज्ञान उन लोगों के लिए सबसे ज्यादा आवश्यक है जो समाज के सांस्कृतिक और साहित्यिक विकास में योगदान देना चाहते हैं। साहित्य के वर्गीय आधार का विवेक लेखक इसलिए महत्वपूर्ण मानता है क्योंकि यह साहित्य के मूल्यांकन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और संवर्धन:- *भारतीय ज्ञान परंपरा को संरक्षित और संवर्धित करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:*

- **भारतीय ज्ञान परंपरा पर शिक्षा:** स्कूलों में भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए एवं प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में भी संगोष्ठी आयोजन करने की कार्य योजना बनाना चाहिए ।
- **भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठों का गठन:** विश्वविद्यालय शैक्षणिक विभाग, महाविद्यालय, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, एवं प्राथमिक विद्यालय, स्तर पर भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ का अधिक से अधिक गठन किया जाए।
- **भारतीय ज्ञान परंपरा पर अनुसंधान:** भारतीय ज्ञान परंपरा पर अधिक से अधिक अनुसंधान किए जाने चाहिए।
- **भारतीय ज्ञान परंपरा संस्थान:** भारतीय ज्ञान परंपरा पर केंद्रित संस्थानों की स्थापना की जानी चाहिए।
- **भारतीय ज्ञान परंपरा पर व्यापक कार्य योजना**: भारतीय ज्ञान परंपरा पर व्यापक कार्य योजना बनाकर अभियान के रूप में भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रचार एवं प्रसार किया जाना चाहिए जिससे भारत के अंतिम छोर मे बसा हुआ नागरिक भी ज्ञान प्राप्त कर सके क्योंकि हमारे देश में आज भी भौगोलिक दृष्टि से ऐसे क्षेत्र हैं जो की भारतीय ज्ञान परंपरा की जानकारी से अछूते हैं।
- **भारतीय ज्ञान परंपरा पर अंतरराष्ट्रीय सहयोग:** भारतीय ज्ञान परंपरा को विश्व के अन्य देशों के साथ साझा किया जाना चाहिए।

गुरुकुल में मिलता ज्ञान का भंडार।
नैतिकता का सीखे संस्कार॥
नैतिकता और अनुशासन की पाठशाला।
गुरुकुल में मिले जीवन का आल्हा॥
ज्ञान और योग का संगम है गुरुकुल।
शारीरिक और मानसिक विकास का मूल॥
सशक्त समाज का निर्माण है गुरुकुल।
संस्कृति और संस्कार की पहचान है गुरुकुल॥
सच्चे जीवन के मूल्य सीखता गुरुकुल।
भारतीय संस्कृति का आधार है गुरुकुल॥
शिक्षा का अनमोल धरोहर है गुरुकुल।
सशक्त व्यक्तित्व का निर्माण है गुरुकुल॥

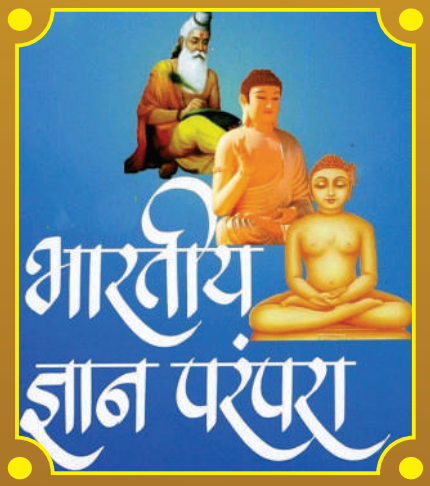

(डॉ प्रदीप सिंह बघेल)
पीपुल्स विश्वविद्यालय भोपाल

❖ *लेखन का स्रोत :- धार्मिक एवं साहित्यिक पुस्तके ,पत्र पत्रिकाएं, प्रिंट मीडिया, सोशल मीडिया, एवं इंटरनेट के माध्यम से*

PEOPLE'S UNIVERSITY
People's University, Bhopal (M.P.)-462037 India
(Established under MP Act 18 of 2011 & Approved u/s 2 (f) of UGC Act 1956)
0755 4309000/4005203, 7354700700 / 7240900900 / 7024101827
Centraladmission@peoplesuniversity.edu.in
www.peoplesuniversity.edu.in